

नगा युद्धवरिम समझौते का वसितार

प्रलिमिस के लिये:

नगा युद्धवरिम समझौता, नगा शांतिप्रक्रया, कारबी आंगलोंग समझौता, 2021, बरू समझौता, 2020, बोडो शांतिसमझौता, 2020, नागरकिता (संशोधन) अधनियम, 2019, नागरकिं का राष्ट्रीय रजस्टर

मेन्स के लिये:

उग्रवाद मुक्त, समृद्ध उत्तर पूर्व के दृष्टिकोण का महत्व, पूर्वोत्तर भारत में संघरण की स्थिति

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्र ने केंद्र सरकार और तीन नगा समूहों के बीच संघरण वरिम समझौते को एक वर्ष के लिये बढ़ा दिया है जिस पर 19 अप्रैल, 2022 को हस्ताक्षर किये गए थे।

नगा युद्धवरिम समझौता:

- नगा समूहों में नेशनल सोशलसिट काउंसलि ॲफ नगालैंड-एनके ((NSCN-NK), नेशनल सोशलसिट काउंसलि ॲफ नगालैंड-रफिंस्मेशन (NSCN-R) तथा नेशनल सोशलसिट काउंसलि ॲफ नगालैंड-के-खांगो (NSCN-K-Khang) शामिल हैं।
 - ये सभी समूह नेशनल सोशलसिट काउंसलि ॲफ नगालैंड (NSCN-IM) और नेशनल सोशलसिट काउंसलि ॲफ नगालैंड-खापलांग (NSCN-K) के अलग-अलग गुट हैं।
- यह समझौता नगा शांतिप्रक्रया के लिये एक महत्वपूर्ण है तथा यह भारत के प्रधानमंत्री के 'उग्रवाद मुक्त, समृद्ध उत्तर पूर्व' के दृष्टिकोण के अनुरूप है।
- सितंबर 2021 में केंद्र ने नेशनल सोशलसिट काउंसलि ॲफ नगालैंड (K) नकी गुप्त के साथ एक वर्ष के लिये संघरण वरिम समझौता किया था।
- केंद्र ने इससे पहले अगस्त, 2015 में NSCN (IM) के साथ एक "फ्रेमवर्क एग्रीमेंट" पर हस्ताक्षर किया थे।

THE NAGA STRUGGLE

1918: Naga Club formed. Seeds of Naga nationalism sown	Agreement interpreted as offer for sovereignty by NNC
1946: Naga National Council (NNC) born under the leadership of A.Z. Phizo	1955: NNC begins armed insurgency. Delhi imposes Assam Disturbed Areas' Act
August 14, 1947: NNC declares independence	1958: AFSPA comes into force
June 1947: Haidari	1963: Nagaland born
1964: Nagaland Peace Mission created, ceasefire signed	
1975: Shillong Accord signed, calls for unconditional ceasefire, termed a 'complete sellout'	
	1980: National Socialist Council of Nagalim (NSCN) formed
A.Z. Phizo	1988: NSCN splits into NSCN (K) and NSCN (I-M)
	1997: NSCN (I-M) signs ceasefire
	2001: NSCN (K) signs ceasefire
	March 2015: NSCN (K) breaks ceasefire
	August 2015: Naga peace accord signed

नगा शांतिप्रक्रया

- वर्ष 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद 'नगा' क्षेत्र परारंभ में असम का हसिसा बना रहा। हालाँकि एक मजबूत राष्ट्रवादी आंदोलन ने नगा जनजातियों के राजनीतिक संघ की मांग करना शुरू कर दिया और कुछ चरमपंथीयों ने भारतीय संघ से पूरी तरह से अलग होने की मांग की।
- वर्ष 1957 में असम के 'नगा पहाड़ी क्षेत्र' और उत्तर-पूर्व में 'त्वेनसांग फरंटियर' डिवीज़न को भारत सरकार द्वारा सीधे प्रशासनिक एक इकाई के तहत एक साथ लाया गया था।
- वर्ष 1960 में यह तय किया गया कि नगालैंड को भारतीय संघ का एक घटक राज्य बनना चाहयि। नगालैंड ने वर्ष 1963 में राज्य का दर्जा हासिल किया और वर्ष 1964 में लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार ने सत्तासीन हुई।

उग्रवाद मुक्त समृद्ध पूर्वोत्तर का दृष्टिकोण (वज़िन)

- यह माना जाता है कि सुरक्षा के दृष्टिकोण से पूर्वोत्तर राज्य देश के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है।
- इसलिये इसका उद्देश्य 2022 तक पूर्वोत्तर में सभी प्रकार के विवादों को समाप्त करना तथा वर्ष 2023 में पूर्वोत्तर में शांति और विकास के एक नए युग की शुरुआत करना है।
- इसके तहत सरकार पूर्वोत्तर की गरमी, संस्कृति, भाषा, साहित्य और संगीत को समृद्ध कर रही है।
- हालिये वर्षों में सरकार ने पूर्वोत्तर भारत में सैन्य संगठनों के साथ कई शांति समझौतों पर भी हस्ताक्षर किये हैं। उदाहरण
 - कार्बी एंगलॉग समझौता, 2021:** इसमें असम के पाँच विद्रोही समूहों, केंद्र और असम की राज्य सरकार के बीच एक त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किये गए थे।
 - बरू समझौता, 2020:** बरू समझौते के तहत त्रिपुरा में 6959 बरू परवासियों के लिये वित्तीय पैकेज सहति स्थायी बंदोबस्त पर भारत सरकार, त्रिपुरा और मजिस्ट्रेट के बीच बरू परवासियों के प्रतिनिधियों के साथ सहमतव्यक्त की गई है।
 - बोडो शांति समझौता, 2020:** वर्ष 2020 में भारत सरकार, असम सरकार और बोडो समूहों के प्रतिनिधियों ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किया जिसमें असम में बोडोलैंड प्रादेशिक क्षेत्र (BTR) को अधिक स्वायत्तता प्रदान की गई।
 - यह शांति समझौता एनएससीएन (एनके), एनएससीएन (आर), एनएससीएन (के)- खांगो, एनएससीएन (आईएस) जैसे नगा विद्रोह में शामिल विभिन्न सैन्य संगठनों के साथ किया गया है।

पूर्वोत्तर भारत में संघर्ष की स्थिति:

- राष्ट्रीय स्तर के संघर्ष: इसमें एक अलग राष्ट्र के रूप में एक विशिष्ट 'मातृभूमि' की अवधारणा को शामिल है।
 - नगालैंड:** नगा विद्रोह, स्वतंत्रता की मांग के साथ शुरू हुआ।

- हालाँकि आजादी की मांग काफी हद तक कम हो गई है, लेकिन 'ग्रेटर नगालैंड' या 'नगालमि' की मांग सहति अंतमि राजनीतिक समझौते का लंबति मुद्दा बना हुआ है।
- **जातीय संघर्ष:** प्रसुख जनजातीय समूहों की राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभावशाली समूहों के खलिफ संख्यात्मक रूप से छोटे और कम प्रभावशाली जनजातीय समूहों के दावे को शामिल करना।
 - **त्रिपुरा:** वर्ष 1947 के बाद से राज्य की जनसांख्यिकीय परोक्षाइल परविरत्ति हुई है, जब नए उभरे पूर्वी पाकिस्तान/बांग्लादेश से बड़े पैमाने पर पलायन ने बड़ी तादात में आदिवासी क्षेत्र से बंगाली भाषी लोगों के बहुमत वाले क्षेत्र में परविरत्ति कर दिया।
 - आदिवासियों को सीमितमूल्यों पर उनकी कृषि भूमि से वंचति कर दिया गया और उन्हें जंगलों में रहने के लिये मज़बूर कर दिया गया।
 - परणिमी तनाव बड़ी हसिया और व्यापक आतंक का कारण बना।
- **उप-क्षेत्रीय संघर्ष:** उप-क्षेत्रीय संघर्ष में ऐसे आंदोलनों को शामिल किया जाता है जो उप-क्षेत्रीय आकांक्षाओं को मान्यता देने को प्रेरित करते हैं और प्रायः राज्य सरकारों या यहाँ तक कि स्वायत्त प्रशिदों के साथ सीधे संघर्ष में व्यापत हो जाते हैं।
 - **मज़िोरम:** हसिक विद्रोह के अपने इतिहास और उसके बाद शांतिकी ओर लौटने वाला यह राज्य अन्य सभी हसिया प्रभावित राज्यों के लिये एक उदाहरण है।
 - वर्ष 1986 में केंद्र सरकार और मज़िोरम नेशनल फ्रंट के बीच 'मज़िो शांति समझौते' और अगले वर्ष राज्य का दर्जा दिये जाने के बाद मज़िोरम में पूर्ण शांति और सद्भाव कायम है।
 - इसके अलावा मज़िोरम के गठन के समय से ही असम और मज़िोरम के बीच सीमा विवाद व्यापत है।
- **अन्य कारण:** प्रायोजित आतंकवाद, सीमापार से प्रवासियों की नरिंतर आवाजाही के परिणामस्वरूप उत्पन्न संघर्ष, महत्वपूर्ण आरथिक संसाधनों पर नियंत्रण को और मज़बूत करने के उद्देश्य के परणिमतः आपराधिक स्थितियाँ बन गई हैं।
 - **असम:** राज्य में प्रसुख जातीय संघर्ष 'विदेशियों' की आवाजाही के कारण है यहाँ विदेशियों से तात्पर्य सीमा पार (बांग्लादेश) से असमिया से काफी अलग भाषा और संस्कृतिवाले लोगों से है।
 - असम में हालिया तनाव नागरिकता (संशोधन) अधिनियम, 2019 और राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर की बहस से उत्पन्न हुआ है।
- **संघर्ष समाधान के तरीके:**
 - सुरक्षा बलों/पुलिस कारवाई को मज़बूत करना।
 - राज्य का दर्जा, छठी अनुसूची, संवधिन के भाग XXI के तहत विशेष प्रवधान जैसे तंत्र के माध्यम से अधिक स्थानीय स्वायत्तता।
 - उग्रवादी संगठनों से बातचीत।
 - विशेष आरथिक पैकेज सहति विकास गतिविधियाँ।



स्रोत : द हृदौ